कुच्ची का कानून : ग्रामीण स्त्रियों में उपजी समकालीन चेतना

मनोज वर्मा
देव लॉज, कमरा न.6,छित्तूपुर
बीएचयू – वाराणसी
manoj02aug@gmail.com

समकालीन कथाकार शिवमूर्ति की प्रसिद्ध कहानी 'कुच्ची का कानून' नामक कहानी एक शिक्षित युवा विधवा स्त्री के अपने मन मुताबिक पुरुष से सम्बन्ध बनाने व बच्चा पाने और भरी पंचायत में अपनी कोख़ पर पल रहे बच्चे अथवा अपने हक के लिए लड़ जाने की बेहद सशक्त, मार्मिक और शानदार कहानी है।

'कुच्ची का कानून' नामक कहानी औरत और मर्द के बीच बराबर-बराबर मालिकाना हक बाटने की मांग की कहानी है। इस कहानी के सन्दर्भ में हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी कहते हैं - "एक भी ऐसा समकालीन रचनाकार नहीं है जिसके पास कुच्ची जैसा सशक्त चरित्र हो, यह चरित्र निर्माण क्षमता शिवमूर्ति को एक बड़ा कथाकार बनाती है।"

कुच्ची इस कहानी की मुख्य व मनोविश्लेषणवादी पात्र है जो तर्क के माध्यम से अपने दम पर अकेले आधी आबादी का प्रतिनिधित्व कर वर्चस्ववादी पुरुष सत्ता से अपने हक के लिए मुठभेड़ करती है।

सातवीं पास कुच्ची जितनी दिलेरी और हिम्मत से अपनी कोख में पल रहे नाजायज बच्चे को जन्म देने का हक दिए जाने की बात करती है, वह पूरे स्त्री विमर्श को पानी पिलाने जैसा लगता। भरी पंचायत में कुच्ची को उसके अवैध गर्भ के लिए घेरा जाता है लेकिन वह अपनी कोख पर अपने हक के लिए आवाज़ बुलंद करती है।

यह कहानी फ्लैश बैक से शुरू होती है। कुच्ची का विवाह रमेसर भगत के इकलौते पुत्र बजरंगी के साथ होता है। बजरंगी सचमुच बजरंग बली की तरह ईमानदार और आज्ञाकारी था। वह अपने चचेरे भाई (बनवारी) के साथ मिलकर बोरिंग का काम किया करता था। एक दिन शाम को काम करने के बाद बनवारी बजरंगी को दारू में कुछ मिलाकर पिला देता है। पीने के बाद उसकी अचानक तबियत खराब हो जाती है और अस्पताल पहुंचने से पहले ही दम तोड़ देता है।

इधर बजरंगी को मरे दो - सवा दो साल हो चले हैं। उधर गांव वालों को कहीं से पता चलता है कि कुच्ची को छः महीने का पेट है। इसी उधेड़बुन को लेकर पंचायत बैठती है और कुच्ची से पूछा जाता है कि क्या ये बात सच है..? आखिर किसका है..? और कहां मिला..?

इस प्रकार सारे पञ्च, गांव वाले, कुच्ची, बनवारी, रमेसर भगत और उसकी पत्नी सब शरीक होते हैं। बनवारी पंचायत के बीच बनावटी इमोशनल ब्लैक मेल करता है और कहता है कि बजरंगी मेरे भाई से बढ़कर था। कुल मिलाकर बनवारी बजरंगी की प्रॉपर्टी को अपना बनाना चाहता था। जब उसने देखा की कुच्ची अपना ससुराल छोड़कर कहीं नहीं जाने वाली तो उसने सारे गांव में उसके छः महीने के पेट वाली बात पूरे गांव में आग की तरह फैला दी।

तेरही के दूसरे दिन बाद कुच्ची के पिता ने कहा कि अब यहां की मोह माया छोड़ो और घर चलने की तैयारी करो। कुच्ची सास-ससुर का प्रणाम करती है। सास कहती है-"चाहती तो हूं कि तुम्हें कहीं न जाने दूं लेकिन किस अख्तियार से रोकूं ?" बाप - बेटी जैसे ही घर से बहार निकलते हैं, सास को दांती लग जाती है और कुच्ची दौड़कर वापस आ जाती है। इन्हें खुद अपने खाने की सुध नहीं है और खूंटे में चार-चार जानवर बंधे हैं ये बेचारे बिना चारा पानी के मर जाएंगे। जाना तो एक दिन है ही लेकिन आज का जाना ठीक नहीं। इस प्रकार कुच्ची अपना ससुराल छोड़कर नहीं जाती और अपने सास- ससुर की सेवा में लग जाती है।

इधर बनवारी कुच्ची के इस सेवा से तंग आकर बलई काका उर्फ़ बाबा (ज्योतिषाचार्य) से बुद्धि लेने पंहुच जाता है जिसकी पचास साल की उम्र में जवानी ऐसी चर्रायी थी कि परायी औरत को घर में बंद कर लिए थे। बाबा बनवारी को चढ़ाता बढ़ाता है और कहता है- "लम्बी है, चौड़ी है, कमासुत है, हंसलोल और जवान है।" उसे मर्द चाहिए तो मर्द मिल जाएगा। तुम्हें प्रॉपर्टी चाहिए, प्रॉपर्टी मिल जाएगी।

एक दिन सुबह बनवारी बोरी घसीटते हुए आ रहा था। दूसरी तरफ कुच्ची भैसों के लिए चारा का बोझा लिए हुए आ रही थी। बनवारी उसे रोकता है और कहता है जरा उठा दे रे छोटकी बहुत भारी है। कुच्ची न चाहते हुए भी संकोच करते-करते बनवारी का बोझा उसके सर पर रखवा देती है। और जैसे ही मुड़ती है, बनवारी एक हाथ से उसे अपनी तरफ खींचकर कस के जकड लेता है। बड़ी मुश्किल से कुच्ची खुद को छुड़ाती है। कुच्ची घर पहुचते ही अपनी सास से पूरा वृतांत सुना डालती है। सास कहती है- "दिन गिरने पर अपनों की आंख का पानी मर जाता है। जब घर में ही डंसने के लिए घात लगाने वाले पैदा हो गए तो न अब मेरा रोकना ठीक रहेगा न तुम्हारा रुकना। हमारी जैसी बीतनी होगी बीतेगी। हम तो पके आम हैं। पता नहीं कब चू पड़ें। अभी तुमने ज़िन्दगी में देखा ही क्या है ? खेलने खाने की उम्र में तो सब बिगड़ गया। हम अपने रिश्ते के बंधन से अब तुम्हें उऋण कर रहे हैं।" मैं कल खुद तुम्हारे बप्पा को आने का संदेश भिजवाती हूं।

कुच्ची के बाप को संदेशा तो गया लेकिन इससे पहले कि उसके बप्पा आते एक नई मुसीबत आ पड़ी। मेंड़ से फिसल कर सास के जांघ की हड्डी टूट गयी। एक्सरे हुआ तो पता चला कि फ्रैक्चर है, आपरेशन होगा। 15-20 दिन अस्पताल में और दो-ढाई महीना घर में बिस्तर पर लेटे रहना होगा।

इमरजेंसी वार्ड का एक नं. बेड अंदर घुसते ही ठीक सामने पड़ता था। जिसका नाम था- 'प्वाइजन बेड'। जहर खाकर आने वाली औरतों के लिए रिजर्व। सब 20-25 साल की उम्र वाली। ज्यादातर सल्फास खाकर और शाम होते-होते खेल ख़तम। वजह- अवैध गर्भ, पति द्वारा पिटाई, दहेज़ प्रताड़ना और तीसरी बेटी पैदा कर देना। इमरजेंसी वार्ड का बेड नं. 7 'बर्न बेड' है। इस पर आने वाली ज्यादातर नवविवाहिता होती थीं। वजह-किसी की गोद में साल भर की बच्ची तो किसी के गोद में 6 महीने की। जहर खाने वालों की मुक्ति तो उसी दिन हो जाती पर जलने वाली 4-5 दिन तक घुटने के बाद मरतीं।

अस्पताल में कुट्टी नाम की एक नर्स से कुच्ची की अच्छी दोस्ती हो गयी थी। कुट्टी का भी पहला पति मर चुका था। कुच्ची नर्स से पूछती है कि तुम दूसरी शादी कब करोगी ? जवाब मिलता है कभी नहीं। कुच्ची पूछती है तुम्हारे तो बच्चा है न ? तो जवाब मिलता है- हां, बच्चा बनाया मगर शादी नहीं की। बच्चा एक फ्रेंड से गिफ्ट लिया। उसके साथ महीने भर सोया और बच्चा मिल गया।

इस तरह से कुट्टी ने दुनियां में क्या-क्या हो रहा है सब बताया। और तो और उसने गिफ्ट का इतिहास भी बताया। एक हीरोइन ने एक खिलाड़ी से गिफ्ट लिया। एक लेडी डॉक्टर ने बीज बैंक से गिफ्ट लिया। अन्य मुल्कों में न जाने कब से गिफ्ट का लेन-देन चल रहा है। गिफ्ट का मतलब समझती हो ?

माने भेंट, माने चिन्ह, माने निशानी। बेचारी कुच्ची हैरत में पड़ जाती है कि मुंदरी और रुमाल का तो गिफ्ट सुना था, अब ये बच्चे का गिफ्ट !

बनवारी पहले मोटर साईकिल दबा कर बैठ गया फिर आबादी की दो-तिहाई ज़मीन घेर ली। फिर महुए की डाल काट ली और अब सरिया कब्जिया लिया। बनवारी कुच्ची को अनेकों प्रकार से लुभाने की कोशिश करता है लेकिन जब कुच्ची अडिग और अटल सत्य से टस से मस नहीं होती है तब बनवारी एक दिन कुच्ची को धमकी देता है कि तू गांव में एक ही शर्त पर रह सकती है - मेरी जांघों के नीचे सो करके सीधे नहीं तो टेढ़े। इस पर पलटवार करते हुए कुच्ची कहती है - इस जनम मैं तेरी जांघ के नीचे नहीं बिछुङ्गी। ये बात तू गांठ बांध ले और हां अपने दिमाग से निकाल दे, आईन्दा फिर कभी तूने मेरी राह काटने की कोशिश की तो तुम्हारे खून की धार एक कर दूंगी।

जब पंचों द्वारा कुच्ची को बच्चा गोद लेने की सलाह दी जाती है तब कुच्ची का बेहद सटीक जवाब - आपने तो गज़ब का कानून बताया बाबा। दूसरे का पैदा किया हुआ गोद ले लूं तो उसे सब कुछ मिल जाएगा और अपनी कोख से पैदा करुंगी तो उसे कुछ नहीं मिलेगा। मेरी कोख से जो पैदा होगा आधा चाहे जिसका

हो आधा खून तो मेरा होगा। गोद वाले बच्चे में तो मेरे खून की एक बूंद भी नहीं होगी। दोनों में से मेरा ज्यादा सगा कौन हुआ..?

जब भरी पंचायत में कुच्ची के बच्चे के बाप का नाम पूछा जाता है तो कुच्ची द्वारा बहुत ही तार्किक जवाब- जब मेरे हाथ, पैर, आंख, कान पर मेरा हक़ है, इन पर मेरी मर्ज़ी चलती है तो मेरी कोख पर किसका हक़ होगा..? किसकी मर्ज़ी चलेगी..?

इसे जानने के लिए कौन सा कानून पढ़ने की ज़रुरत है..? गौतम मुनि ने सारी मर्दानिगी अपनी औरत(अहिल्या) पर ही क्यों दिखाई..? सूने घर में घुस कर जिसने छल से अकेली औरत की इज्जत लूटी उसका तो आप कुछ उखाड़ नहीं पाए। वो मूंछ ऐंठता सामने से निकल गया। उल्टे खिसियाहट मिटाने के लिए अपनी ही छली गई पत्नी को पत्थर बना दिया। ये कैसा इंसाफ है..? इसमें औरत के सीखने के लिए क्या है..?

हम सब अहिल्या हैं। आज भी अहिल्या हैं। आज भी पत्थर हैं और आज भी छली जा रही हैं। ये धमकी कोई नई नहीं है। स्त्री जाति को ये धमकियां, शोषण सदियों और हज़ारों साल से मिलती आ रही हैं। क्यों..? क्योंकि ऊपर वाले ने ही औरत के साथ अन्याय किया है..उसकी छाती तो फुला दी लेकिन उसका हौसला घटा दिया। जिस दिन से लड़की की छाती फूलने लगती है उसका हौसला घटने लगता है। वो फूली हुई छाती पर गुमान करती है और उसी के चलते मारी जाती है। पैदा तो पहले भी होते रहे हैं बच्चे, लेकिन माँ के डर जाने, हौसला छोड़ देने के चलते मारे जाते रहे, फेके जाते रहे, गिराए जाते रहे।

कुंती माई डर गयीं, अंजनी माई डर गयीं, सीता की माई डर गयीं लेकिन ई माई डरने वाली नहीं, मेरा बच्चा पैदा हो कर रहेगा। जैसे खेत से ख़ुराक लेकर बीज पौधा बनता है वैसे बूंद को आदमी बनाने के लिए मां को नौ महीने अपना खून पिलाना पड़ता है। बूंद सिर्फ बूंद होती है आदमी का बच्चा नहीं होती।

इस प्रकार हम कह सकते हैं शिवमूर्ति की प्रसिद्ध कहानी 'कुच्ची का कानून' ग्रामीण समाज के जातिवाद, स्त्री दमन, पैदा होती स्त्री चेतना और ताकत और हिंसा की बेजोड़ और सशक्त अभिव्यक्ति है।